कुमाऊँ विश्वविद्यालय

नैनीताल(उत्तराखंड)

हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग

Programmes

1. स्नातक (बी.ए.)
2. परास्नातक (एम.ए.)
3. शोध (पी-एच.डी.)

स्नातक (बी.ए.)

Programme Educational Objectives

कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा कला संकाय में स्नातक स्तर पर बैचलर ऑफ आर्ट्स – बी.ए. की उपाधि प्रदान की जाती है। इसके अन्तर्गत विभिन्न विषयों का समावेश किया गया है, जिनमें हिन्दी भाषा एवं हिन्दी साहित्य प्रमुख विषय हैं। बी.ए. की यह उपाधि उच्चशिक्षा में शिक्षार्थी की प्रथम उपाधि है।

PEO 1. सम्मानजनक आजीविका प्राप्ति हेतु शिक्षार्थी को मानविकी के अन्य किन्हीं दो विषयों के साथ हिन्दी भाषा एवं हिन्दी साहित्य का ज्ञान उपलब्ध कराते हुए स्नातक की उपाधि के लिए प्रस्तुत करना।

PEO 2. परास्नातक शिक्षा, उच्चस्तरीय शोध एवं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु शिक्षार्थी को शैक्षिक आधारभूमि प्रदान करना।

PEO 3. शिक्षार्थी को आलोचनात्मक, रचनात्मक, उदार, नवोन्मेषी एवं तार्किक चिंतन के लिए प्रेरित करना।

PEO 4. समाज व राष्ट्र की सेवा के लिए उच्च जीवन एवं नैतिक मूल्यों के धारक स्नातक तैयार करना।

हिन्दी भाषा

Programme Outcome

PO 1. शिक्षार्थी आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिन्दी भाषा के अध्ययन से हिन्दी भाषा के व्यावहारिक पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।

PO 2. शिक्षार्थी आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिन्दी भाषा के अध्ययन से हिन्दी भाषा के संवैधानिक यथा राजभाषा व राष्ट्रभाषा सम्बन्धी पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।

PO 3. शिक्षार्थी आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिन्दी भाषा के अध्ययन से हिन्दी के सम्पर्क भाषा सम्बन्धी पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।

PO 4. शिक्षार्थी आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिन्दी भाषा के अध्ययन से हिन्दी के कार्यालयी व्यवहार एवं उपयोग में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।

PO 5. शिक्षार्थी **संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोगों के परीक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित हिन्दी भाषा की आधार व अनिवार्य शिक्षा** प्राप्त करता है।

I

प्रथम प्रश्नपत्र

(बी.ए. प्रथम सत्र : अध्ययन अवधि 6 माह)

Course Outcome

CO 1. शिक्षार्थी हिन्दी भाषा के व्यावहारिक प्रयोजनार्थ वर्तनी एवं शब्दों के मानक स्वरूप का ज्ञान व प्रशिक्षण पाता है।

CO 2. शिक्षार्थी व्यावहारिक प्रयोजनार्थ शुद्ध लेखन हेतु हिन्दी की वाक्य-संरचना एवं व्याकरण का ज्ञान व प्रशिक्षण पाता है।

CO 3. शिक्षार्थी को व्यावहारिक-व्यावसायिक प्रयोजनार्थ हिन्दी भाषा की अत्यन्त समृद्ध शब्द सम्पदा तथा उसकी समाहार-समायोजन शक्ति का ज्ञान होता है।

CO 4. शिक्षार्थी कार्यालयी प्रयोजनार्थ पारिभाषिक – प्रतिपारिभाषिक शब्दों के प्रयोग का ज्ञान व प्रशिक्षण पाता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

1.वर्णविचार : - हिंदी वर्णमाला: स्वर और व्यंजन, वर्णों का उच्चारण और वर्गीकरण

2.हिंदी-वर्तनीः हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, शब्द और वर्तनी-विश्लेषण, वर्तनी विषयक अशुद्धियाँ और उनका शोधन। -

3.शब्द विचार :- व्याकरण के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण(विकारी और अविकारी शब्द)

4.हिंदी शब्द रचना- समास, संधि, उपसर्ग, प्रत्यय, शब्द की परिभाषा, रचना के आधार पर शब्दभेद- रूढ़, यौगिक, योगरूढ़; इतिहास के आधार पर- तत्सम्, तद्भव, देशी, देशज, विदेशी और संकर शब्द। अर्थ के आधार पर पर्यायवाची, विलोम और अनेकार्थी शब्द, वाक्यांश के लिए एक शब्द ।

5.पारिभाषिक शब्द: तात्पर्य, परिभाषा तथा संलग्न परिशिष्ट के अंतर्गत संगृहीत- 250 अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के हिंदी प्रतिपारिभाषिक शब्द, हिंदी पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी प्रतिपारिभाषिक । -

अथवा

अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद

6.लोकोक्ति एवं मुहावरे

7.विराम चिह्न और उनका प्रयोग।

8.वाक्य रचना, वाक्य-भेद, वाक्य-विश्लेषण, वाक्य-संश्लेषण, वाक्य-शुद्धि।

II

द्वितीय प्रश्नपत्र

(बी.ए. द्वितीय सत्र : अध्ययन अवधि 6 माह)

Course Outcome

CO 1. शिक्षार्थी को हिन्दी भाषा के विस्तृत व समृद्ध इतिहास व विकास का ज्ञान होता है।

CO 2. शिक्षार्थी को हिन्दी की शैलियों यथा हिन्दी, हिन्दुस्तानी व उर्दू का ज्ञान होता है, जो भाषा के व्यावहारिक प्रयोग में काम आता है।

CO 3. शिक्षार्थी को हिन्दी की बोलियों का ज्ञान होता है, जिसके आधार पर वह अपने भाषा संस्कारों को समृद्ध करता है तथा सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग अधिक कुशलता के साथ कर पाता है।

CO 4. शिक्षार्थी को राजभाषा के रूप में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति का ज्ञान होता है, जिसकी आवश्यकता उसे सरकारी सेवाओं में आवश्यकीय रूप से होती है।

CO 5. शिक्षार्थी विभिन्न व्यावहारिक व व्यावसायिक प्रयोजनों हेतु हिन्दी के मानकीकृत रूप का ज्ञान व प्रशिक्षण पाता है।

CO 6. शिक्षार्थी कम्प्यूटर व इंटरनेट की तकनीक में हिन्दी के प्रयोग का आरंभिक ज्ञान व प्रशिक्षण पाता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

1. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास।
2. हिंदी की शैलियाँ- हिंदी, हिंदुस्तानी, उर्दू।
3. हिंदी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ- (1) पश्चिमी हिंदी (2) पूर्वी हिंदी (3) राजस्थानी (4) बिहारी (5) पहाड़ी एवं उनकी बोलियाँ।
4. हिंदी भाषा: राजभाषा, राष्ट्रभाषा, मानक भाषा, सम्पर्क भाषा, इंटरनेट और हिंदी
5. देवनागरी लिपि एवं अंक
6. संक्षेपण/पल्लवन
7. प्रारूपण
8. निबंध लेखन

हिन्दी साहित्य

Programme Outcome

PO 1. साहित्य मानव संवेदना की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्रोत रहा है। कलाओं में यह सम्पूर्ण कला है। साहित्य समाज का प्रतिदर्श है। स्नातक उपाधि में इस विषय के चयन व अध्ययन से शिक्षार्थी को साहित्य के सांगोपांग महत्व का ज्ञान होता है।

PO 2. शिक्षार्थी को राष्ट्र की सर्वप्रमुख भाषा हिन्दी के अत्यन्त समृद्ध साहित्य के सम्पूर्ण स्वरूप का ज्ञान होता है।

PO 3. शिक्षार्थी को हिन्दी साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं का ज्ञान होता है, जिससे उसमें रचनात्मकता का प्रस्फुटन एवं विकास होता है।

PO 4. शिक्षार्थी को जीवन के आजीविकोपार्जन सम्बन्धी पक्ष के रूप में हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप व महत्व का ज्ञान एवं प्रशिक्षण होता है।

PO 5. साहित्य के अध्ययन में अन्य अनुशासनों के सन्दर्भ यथा सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, पर्यावरणीय आदि समाहित होते हैं। स्नातक में हिन्दी साहित्य का चयन शिक्षार्थी को समग्र रूप से शिक्षित करता है।

PO 6. शिक्षार्थी **संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोगों के परीक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित हिन्दी साहित्य की आधार व अनिवार्य शिक्षा** प्राप्त करता है।

I

<u>प्रथम प्रश्नपत्र - प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य (प्रथम सत्र)</u>

CO 1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के आरम्भिक काल की कविता का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता है।

CO 2. शिक्षार्थी चंदबरदाई, जायसी व तुलसी के कृतित्व को समझने के क्रम में महाकाव्य विधा का शिल्पगत परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 3. शिक्षार्थी आदिकालीन वीरकाव्य का सैद्धान्तिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता है।

CO 4. शिक्षार्थी निर्गुण काव्यधारा व संत साहित्य का सैद्धान्तिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता है।

CO 5. शिक्षार्थी सूफी काव्यधारा, सगुण काव्यधारा तथा उसके अंतर्गत रामभक्ति तथा कृष्णभक्ति शाखा के महत्वपूर्ण काव्य का सैद्धान्तिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता

है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य : सम्मिलित कवि – चंदबरदाई, कबीर, जायसी, सूरदास एवं तुलसीदास

(पाठ्यपुस्तक प्रो. मानवेंद्र पाठक द्वारा सम्पादित)

***

II

द्वितीय प्रश्नपत्र - हिन्दी कथा साहित्य (प्रथम सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी हिन्दी की कथा परम्परा का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 2. शिक्षार्थी हिन्दी उपन्यास के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 3. शिक्षार्थी हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास के अध्ययन से उपन्यास विधा का शिल्पगत ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के आधार पर कहानी विधा का शिल्पगत ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 6. शिक्षार्थी कथा-साहित्य की समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

हिन्दी कथा साहित्य : **1. त्यागपत्र(उपन्यास) – जैनेंद्र कुमार**

2. कहानी सप्तक – सं प्रो. नीरजा टंडन

***

III

तृतीय प्रश्नपत्र - रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग परिचय (द्वितीय सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के तीसरे काल रीतिकाल के विषय में ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 2. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कविताओं के आधार पर रीतिकालीन कविता की कला और शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 3. शिक्षार्थी काव्यांग के अन्तर्गत रस के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 4. शिक्षार्थी काव्यांग के अन्तर्गत छंद के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 5. शिक्षार्थी काव्यांग के अन्तर्गत अलंकार के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 6. शिक्षार्थी काव्यांग के अन्तर्गत शब्दशक्ति के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग परिचय : 1. सम्मिलित कवि – केशव, बिहारी, देव, घनानंद एवं भूषण

2. काव्यांग परिचय – रस, छंद, अलंकार एवं शब्दशक्तियाँ

***

IV

चतुर्थ प्रश्नपत्र - नाटक एवं एकांकी (द्वितीय सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी हिन्दी में नाटक विधा के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 2. शिक्षार्थी नाटक की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्पराओं का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 3. शिक्षार्थी नाटक के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित नाटक के अध्ययन के आधार पर नाट्यसमीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 5. शिक्षार्थी एकांकी के उद्भव -विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 6. शिक्षार्थी एकांकी के स्वरूप, महत्व एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

नाटक एवं एकांकी : 1. ध्रुवस्वामिनी (नाटक) – जयशंकर प्रसाद

2. चार एकांकी – सं. प्रो. डी.एस.पोखरिया

***

V

पंचम प्रश्नपत्र - द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी काव्य (तृतीय सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी हिन्दी के द्विवेदी युग व नवजागरण काल के विषय में ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 2. शिक्षार्थी हिन्दी कविता के छायावाद युग का ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 3. शिक्षार्थी खड़ी बोली हिन्दी की आरम्भिक समर्थ काव्य-परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित द्विवेदीयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी

कविता के स्वरूप, महत्व तथा शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित छायावादयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप, महत्व तथा शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 6. शिक्षार्थी आधुनिक कविता की समीक्षा का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी काव्य : हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा

(पाठ्यपुस्तक प्रो. चंद्रकला रावत द्वारा सम्पादित)

***

VI

षष्ठ प्रश्नपत्र - हिन्दी के प्रतिनिधि निबंध (तृतीय सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी निबंध विधा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 2. शिक्षार्थी हिन्दी में निबंध विधा के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 3. शिक्षार्थी सामाजिक व साहित्यिक विषयों से निबंध के वैचारिक सम्बन्ध तथा अभिव्यक्ति का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 4. शिक्षार्थी निबंध के प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित निबंधकारों के अध्ययन से विचार के क्षेत्र में मौलिक अभिव्यक्ति का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

हिन्दी के प्रतिनिधि निबंध : सम्मिलित निबंधकार – चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बालकृष्ण भट्ट, रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, हरिशंकर परसाई, विद्यानिवास मिश्र, रामधारी सिंह दिनकर, निर्मल वर्मा एवं कुबेरनाथ राय

(पाठ्यपुस्तक प्रो. नीरजा टंडन द्वारा सम्पादित)

***

VII

सप्तम प्रश्नपत्र - छायावादोत्तर हिन्दी कविता (चतुर्थ सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी छायावादोत्तरी कविता का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 2. शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना से सम्पृक्त काव्य का परिचय प्राप्त करता है।

CO 3. शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता में गीतकाव्य का परिचय प्राप्त करता है।

CO 4. शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता में प्रगतिवाद का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 5. शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता में प्रयोगवाद का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 6. शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता में नयी कविता का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 7. शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता में साठोत्तरी कविता का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 8. शिक्षार्थी छायावादोत्तरी कविता के विविधरूपी शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

छायावादोत्तर हिन्दी कविता : सम्मिलित कवि – अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, कुंवर नारायण, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना एवं केदारनाथ सिंह

(पाठ्यपुस्तक प्रो. शिरीष कुमार मौर्य द्वारा सम्पादित)

***

VIII

अष्टम प्रश्नपत्र - स्मारक साहित्य(चतुर्थ सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी को हिन्दी में स्मारक साहित्य लेखन परम्परा का ज्ञान होता है।

CO 2. शिक्षार्थी को स्मारक साहित्य के स्वरूप व उसकी विधाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

CO 3. शिक्षार्थी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित रेखाचित्रों के अध्ययन से रेखाचित्र विधा के स्वरूप, तत्वों और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त होता है

CO 4. शिक्षार्थी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित संस्मरणों के अध्ययन से संस्मरण विधा के स्वरूप, तत्वों और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

CO 5. शिक्षार्थी को महान साहित्यकारों के जीवन से जुड़ी घटनाओं को पढ़ने से उच्च जीवन मूल्यों की शिक्षा व प्रेरणा प्राप्त होती है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

स्मरण वीथिका: शिवपूजन सहाय, सेठ गोविंददास, बनारसीदास चतुर्वेदी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी एवं विष्णुकांत शास्त्री के रेखाचित्र।

माखनलाल चतुर्वेदी, अज्ञेय, डॉ. नगेन्द्र एवं महादेवी वर्मा कृत संस्मरण

(पाठ्यपुस्तक 'स्मरण वीथिका' प्रो. निर्मला ढैला बोरा द्वारा सम्पादित)

***

IX

नवम प्रश्नपत्र - प्रयोजनमूलक हिन्दी (पंचम सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी हिन्दी भाषा का प्रयोजनमूलक ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO 2. शिक्षार्थी सामान्य कार्यालयी प्रयोजनों यथा कार्यालयी पत्राचार, प्रारूपण, टिप्पण आदि में हिन्दी के प्रयोग का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO 3. शिक्षार्थी हिन्दी भाषा की कम्प्यूटिंग यथा टाइपिंग, फांट प्रबन्धन, वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 4. शिक्षार्थी मीडिया यथा प्रेस, रेडियो, टी.वी. वीडियो, इंटरनेट आदि के क्षेत्र में लेखन-सम्पादन सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 5. शिक्षार्थी जनसंचार माध्यमों का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

प्रयोजनमूलक हिन्दी : 1. **पत्राचार (कार्यालयी पत्र, प्रारूपण, टिप्पणी, व्यावसायिक पत्र)**

2. **संक्षेपण एवं पल्लवन**
3. **भाषा कम्प्यूटिंग, वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग और फांट प्रबंधन**
4. **सम्पादन कला, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया, फीचर लेखन, पृष्ठसज्जा और प्रस्तुतीकरण**
5. **मीडिया लेखन, संचार भाषा का स्वरूपस्वरूप और वर्तमान संचार व्यवस्था**
6. **प्रमुख जनसंचार माध्यम, प्रेस, रेडियो, टीवी, फिल्म, वीडियो और इंटरनेट। माध्यमोपयोगी लेखन प्रविधि।**

***

X

दशम प्रश्नपत्र - लोक साहित्य (पंचम सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी साहित्य के लोकपक्ष का ऐतिहासिक तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 2. शिक्षार्थी लोक साहित्य के स्वरूप, अध्ययन की प्रविधियों, संकलन प्रक्रिया आदि का प्रशिक्षण एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 3. शिक्षार्थी लोक संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 4. शिक्षार्थी लोक साहित्य के अन्तर्गत लोकगीतों के स्वरूप, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 5. शिक्षार्थी लोक साहित्य के अन्तर्गत लोक नाट्य के स्वरूप, उसके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 6. शिक्षार्थी लोक साहित्य के अन्तर्गत लोककथाओं के स्वरूप, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 7. शिक्षार्थी लोक साहित्य के अन्तर्गत लोकगाथाओं के स्वरूप, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO 8. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित लोक साहित्य के अध्ययन द्वारा लोक का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

लोक साहित्य : परिभाषा एवं स्वरूप, लोक संस्कृति और लोक साहित्य, लोक साहित्य के अध्ययन की प्रक्रिया और संकलन की समस्याएँ। लोक- साहित्य के प्रमुख रूप – ।. लोक गीत : अर्थ एवं स्वरूप, संस्कार गीत, व्रत गीत, श्रम परिहार गीत और ऋतुगीत। 2. लोक नाट्य : अर्थ, स्वरूप और विशेषाताएँ, विविध रूप यथा रामलीला, स्वाँग, यक्षगान, भवाई, नाच, तमाशा, नौटंकी, जात्रा, कथकली आदि। 3. लोक कथा : अर्थ एवं स्वरूप, व्रतकथा, परीकथा, नागकथा, बोधकथा आदि(सौतेलि इज, भै भूको मै सिती)। 4. लोकगाथा : अर्थ एवं स्वरूप, उत्पत्ति, परम्परा, सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्रस्तुति। प्रसिद्ध लोकगाथाएँ – राजुला-मालूशाही, गौरा-महेश्वर, तीलू रौतेली। (पाठ्यपुस्तक प्रो. चन्द्रकला रावत द्वारा सम्पादित)

***

XI

एकादश प्रश्नपत्र - हिन्दी पत्रकारिता (षष्ठ सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी को पत्रकारिता के स्वरूप और प्रमुख प्रकारों का ज्ञान होता है।

CO 2. शिक्षार्थी को हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव और विकास का ज्ञान होता है।

CO 3. शिक्षार्थी को पत्रकारिता के मूल तत्वों का ज्ञान होता है।

CO 4. शिक्षार्थी को सम्पादन कला के विभिन्न आयामों का ज्ञान होता है।

CO 5. शिक्षार्थी को पत्रकारिता से जुड़ी लेखन प्रविधियों का ज्ञान होता है।

CO 6. शिक्षार्थी को प्रेस क़ानून तथा प्रेस आचार संहिता का ज्ञान होता है।

CO 7. शिक्षार्थी को लोकतंत्र में मुक्त पत्रकारिता के महत्व का ज्ञान प्राप्त होता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

हिन्दी पत्रकारिता : 1. पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख प्रकार

2. हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास

3. समाचार पत्रकारिता के मूल तत्व : समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम

4. सम्पादन कला के सामान्य सिद्धान्त, शीर्षकीकरण, पृष्ठ विन्यास, आमुख और समाचार पत्र की प्रस्तुति प्रक्रिया

5. दृश्य सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स) की व्यवस्था और फोटोपत्रकारिता

6. पत्रकारिता से सम्बन्धित लेखन : सम्पादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन आदि की प्रविधि

7. प्रेस संबंधी प्रमुख क़ानून तथा आचार संहिता

8. प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व

***

XII

द्वादश प्रश्नपत्र - उत्तराखंड का हिन्दी साहित्य (षष्ठ सत्र)

CO 1. शिक्षार्थी को आधुनिक हिन्दी साहित्य में उत्तराखंड के महत्वपूर्ण लेखकों की उपस्थिति व महत्व का ज्ञान प्राप्त होता है।

CO 2.शिक्षार्थी को आधुनिक काल में उत्तराखंड के हिन्दी साहित्य की समृद्ध परम्परा का ज्ञान प्राप्त होता है।

CO 3.शिक्षार्थी को उत्तराखंड के कवियों का परिचय व उनके कृतित्व का ज्ञान प्राप्त होता है।

CO 4.शिक्षार्थी को उत्तराखंड के निबंधकारों का परिचय व उनके कृतित्व का ज्ञान प्राप्त होता है।

CO 5.शिक्षार्थी को उत्तराखंड के कहानीकारों का परिचय व उनके कृतित्व का ज्ञान प्राप्त होता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

उत्तराखंड का हिन्दी साहित्य : लीलाधर जगूड़ी, मंगलेश डबराल, बलवंत मनराल और तारा पांडे की कविताएँ। पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, रमेशचंद्र शाह और शिवानंद नौटियाल के निबंध। रमाप्रसाद घिल्डियाल 'पहाड़ी', यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक', पानू खोलिया और सुभाष पंत की कहानियां। (पाठ्यपुस्तक प्रो. जगत सिंह बिष्ट द्वारा सम्पादित)

एम. ए. हिन्दी

Programme Outcomes

PO 1. साहित्य ऐसा स्रोत है, जो समाज व उसकी दशा, गति, दिशा, उसके उद्वेलन आदि को सजीवता से चित्रित करता है। शिक्षार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हुए अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक गत्यात्मकता की पहचान प्राप्त करता है।

PO 2. हिन्दी साहित्य आदिकाल से भारत के इतिहासक्रम में मुस्लिमों के आगमन और तत्कालीन सामाजिक, समावेशीकरण/समांगीकरण राज व्यवस्था, धर्म, भक्ति के विभिन्न पंथ, सूफी, संत, नाथ, सिद्ध, निर्गुण-सगुण, रीति, राज्याश्रयी श्रृंगाराभिव्यक्ति आदि से लेकर आधुनिक काल की विभिन्न विचारधाराओं/आंदोलनों और अद्यतन उत्तरआधुनिक वैचारिक परिदृश्य तक एक सुदीर्घ-सुलिखित दस्तावेज़ की तरह है। शिक्षार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य के अध्ययन से साहित्य के साथ-साथ इस लम्बी परम्परा का भी ज्ञान प्राप्त करता है।

PO 3. शिक्षार्थी साहित्य के पारंपरिक सांस्कृतिक आग्रहों के प्रति, नैतिक मूल्यों के प्रति सचेत होने के साथ-साथ इस महान भारतीय परम्परा के अग्रगामी आधुनिक स्वरूप का भी ज्ञान प्राप्त करता है।

PO 4. भौतिकवादी जगत में निरन्तर बदलते जीवन मूल्यों से उपजी आस्था-अनास्था, आशा-निराशा, संगति-विसंगति आदि में जीते मानव समाज को सही दिशा निर्देश साहित्य ही करता है। शिक्षार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन कर सही व सच्चे अर्थ में समुन्नत जीवनमूल्यों का धारक मनुष्य बनता है।

PO 5. शिक्षार्थी संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोगों की प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विशिष्ट विषय के रूप में हिन्दी साहित्य का समग्र ज्ञान प्राप्त करता है।

PO 6. शिक्षार्थी हिन्दी अनुवाद तथा हिन्दी पत्रकारिता जैसे रोजगार क्षेत्रों में कार्य करने हेतु आधारभूत ज्ञान प्राप्त करता है।

PO 7. शिक्षार्थी उच्चस्तरीय शोध एवं उच्चशिक्षा में अध्यापन हेतु आधारभूत ज्ञान तथा योग्यता प्राप्त करता है।

<u>परास्नातक हिन्दी का पाठ्यक्रम तथा निर्गम</u>

I

प्रथम प्रश्नपत्र - आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य(प्रथम सत्र)

CO1. शिक्षार्थी आदिकाल के कवि अब्दुल रहमान की कृति संदेस रासक के अध्ययन से हिन्दी भाषा के आदिकालीन तथा अपभ्रंश के परवर्ती रूप अवहट्ट का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी आदिकाल के प्रसिद्ध महाकाव्य पृथ्वीराज रासो के अध्ययन से वीरकाव्य की परम्परा तथा आदिकालीन हिन्दी के राजस्थानी प्रभाव वाले अवहट्ट रूप का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.संस्कृत में जयदेव का गीतकाव्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिन्दी में यह महत्व विद्यापति को प्राप्त है। शिक्षार्थी विद्यापति के पदों के अध्ययन से गीतकाव्य की समृद्ध भारतीय परम्परा तथा मैथिली भाषा का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त करेगा।

CO4.शिक्षार्थी कबीर की वाणी का अध्ययन करते हुए हिन्दी भक्तिकाव्य में निर्गुण के स्वरूप तथा हिन्दी की संतकाव्य परम्परा का निकट परिचय तथा सैद्धानित्क ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी मलिक मोहम्मद जायसी के महाकाव्य पद्मावत का अध्ययन करते हुए हिन्दी भक्तिकाव्य में प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा का ऐतिहासक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

1. अब्दुल रहमान: संदेश रासक, संपा0 डा. विश्वनाथ त्रिपाठी (व्याख्या हेतु, प्रथम प्रक्रम)
2. चंदवरदाई: कयमास-वध, संपा0 राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, प्रकाशन केन्द्र, सीतापुर रोड, लखनऊ।
3. विद्यापति: संपा0 शिवप्रसाद सिंह (व्याख्या हेतु केवल प्रार्थना एवं रूप वर्णन), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. कबीरदास: कबीर वाणी पीयूष, संपा0 जयदेव सिंह/वासुदेव सिंह (व्याख्या हेतु प्रारंभ की 50 साखियाँ एवं प्रारम्भ के 10 पद), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. मलिक मुहम्मद जायसी: जायसी ग्रंथावली, संपा0 रामचंद्र शुक्ल; (व्याख्या हेतु केवल 'नागमती वियोग' वर्णन खंड)।

II

द्वितीय प्रश्न-पत्र - सगुण काव्य एवं रीतिकालीन काव्य(प्रथम सत्र)

CO1. शिक्षार्थी मध्यकालीन सगुण भक्तिधारा व उसकी शाखाओं से रीतिकालीन काव्य तक की विभिन्न धाराओं का ऐतिहासिक परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी सूरदास की रचनाओं का अध्ययन कर सगुण धारा की कृष्णभक्ति शाखा का आलोचनात्मक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है तथा सूरदास के काव्य में उपस्थित प्रकृति और जीवन के लोक स्वरूप का साक्षात्कार कर पर्यावरण की सुन्दरता व उसके संरक्षण की अनिवार्यता के महत्व को समझता है।

CO3. शिक्षार्थी तुलसी दास के काव्य का अध्ययन कर सगुण धारा की रामभक्ति शाखा का आलोचनात्मक व सैद्धान्तिक ज्ञान तथा विभिन्न धार्मिक-सामाजिक मान्यताओं व मतों के बीच समन्वय की दृष्टि प्राप्त करता है। यह समन्वयवादी दृष्टि शिक्षार्थी के अपने निजी

जीवन में भी विभिन्न क्षेत्रों में सफलता हेतु सहायक होती है।

CO4. शिक्षार्थी केशवदास के काव्य के अध्ययन से भारतीय काव्यशास्त्र का परम्परागत ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी बिहारी के काव्य के अध्ययन से कविता में भाषा में मितकथन व अलंकारों के सटीक प्रयोग का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है, जिससे उसमें काव्यात्मक अभिरुचि का विकास एवं विस्तार होता।

CO6. शिक्षार्थी घनानंद की कविता के अध्ययन से सामाजिक रूढ़ियों के बीच प्रेम की विलक्षण अनुभूति से परिचित होता है, जिससे वह तत्कालीन से लेकर समकालीन समाज तक की सम्बन्ध आधारित जटिल संरचना के ज्ञान के साथ ही विवेचन की मनोवैज्ञानिक समझ भी प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

1. सूरदास: भ्रमरगीत सार: संपा0 आचार्य रामचंद्र शुक्ल (व्याख्या के लिए पद संख्या 50 से 100 तक), नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. तुलसीदास: विनयपत्रिका: तुलसीदास (व्याख्या के लिए पद संख्या 51 से 100 तक), गीताप्रेस गोरखपुर।
3. केशवदास: संक्षिप्त रामचन्द्रिका: संपा0 डा. जगन्नाथ तिवारी। (व्याख्या हेतु प्रारंभिक पाँच प्रकाश- 1. मंगलाचरण, 2. अयोध्यापुरी वर्णन, 3. सीता स्वयंवर, 4. परशुराम संवाद, 5. वन मार्ग में राम, रंजन प्रकाशन, सिटी स्टेशन मार्ग आगरा।
4. बिहारी: बिहारी नवनीत: संपा0 रवीन्द्र कुमार जैन (व्याख्या हेतु प्रारंभिक 50 दोहे), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. घनानंद: घनानंद कवित्त: संपा0 आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (व्याख्या हेतु आरंभ के 20 छंद)

III

तृतीय प्रश्नपत्र - भारतीय काव्यशास्त्र (प्रथम सत्र)

CO1. शिक्षार्थी भारतीय काव्यशास्त्र की अत्यन्त समृद्ध परम्परा का ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी काव्य लक्षणों, काव्य हेतु तथा काव्य प्रयोजनों के अध्ययन से कविता के शिल्प और विषयवस्तु से लेकर उसके वृहद् सामाजिक उद्देश्यों तक आलोचना का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO3.विभिन्न काव्य तत्वों के संधान के आधार पर परम्परा में आचार्यों ने काव्य विवेचन किया, फलस्वरूप रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति एवं औचित्य सम्प्रदाय अस्तित्व में आए,

जो पश्चिमी काव्य चिंतन में इस विस्तार के साथ नहीं मिलती। शिक्षार्थी इन काव्य सम्प्रदायों के अध्ययन से भारतीय परम्परा में काव्य चिंतन की विलक्षणता, गहराई और सैद्धान्तिक विस्तार का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी हिन्दी आलोचना के उद्भव व विकास का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी हिन्दी के सामान्य आलोचना सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित आलोचकों के कृतित्व के अध्ययन से हिन्दी आलोचना की की विशिष्ट विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO7.शिक्षार्थी साहित्यिक कृतियों के आलोचन का व्यावहारिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. काव्यशास्त्र: परिभाषा, काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं काव्य भेद।
2. काव्य संप्रदाय: रस संप्रदाय: रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण, अलंकार संप्रदाय, रीति संप्रदाय, ध्वनि संप्रदाय, वक्रोक्ति संप्रदाय एवं औचित्य संप्रदाय।
3. हिंदी आलोचना: विकास, प्रमुख हिंदी आलोचक और उनके आलोचना सिद्धांत (आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा. नगेन्द्र, डा. रामविलास शर्मा, डा. नामवर सिंह)।

IV

चतुर्थ प्रश्न-पत्र-हिंदी साहित्य का इतिहास: आदिकाल से रीतिकाल तक(प्रथम सत्र)

CO1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा,प्रविधि, काल-विभाजन पद्धति, नामकरण की समस्या व औचित्य के कारणों का ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों तथा आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन से जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य, नाथ साहित्य , वीरकाव्य-रासो साहित्य आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान और चंद बरदाई, अब्दुल रहमान, जगनिक, स्वयंभू, धनपाल, नरपति नाल्ह, विद्यापति आदि महत्वपूर्ण कवियों के कृतित्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के पूर्व मध्यकाल/भक्तिकाल के प्रमुख कवियों का ऐतिहासिक परिचय तथा प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल /रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय एवं प्रमुख प्रवृत्तियों का सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी रीतिकालीन कवि-आचार्यों द्वारा रचित लक्षण ग्रंथों की परम्परा का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO6.शिक्षार्थी रीतिकाल की काव्यधाराओं यथा रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त तथा उनके प्रतिनिधि कवियों का ऐतिहासिक परिचय एवं उनकी कविता के चमत्कारपूर्ण शिल्पगत वैशिष्ट्य का ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, काल विभाजन और नामकरण, हिंदी साहित्य का आदिकाल: नामकरण और प्रमुख प्रवृत्तियाँ, नाथ-सिद्ध साहित्य पंरपरा, रासो काव्य परंपरा, आदिकाल के प्रतिनिधि कवि और उनकी रचनाएँ।
2. मध्यकाल: भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्रमुख प्रवृत्तियाँ, निर्गुण संत काव्य और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ, सूफी काव्य परंपरा।
3. भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा: रामभक्ति परंपरा, कृष्णभक्ति परंपरा, भक्तिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ।
4. रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्रमुख प्रवृत्तियाँ, लक्षण ग्रंथ-परंपरा, रीतिकाल की काव्यधाराएँ: रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्य, प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ।

V

पंचम प्रश्न-पत्र - आधुनिक हिंदी काव्य :छायावाद तक(द्वितीय सत्र)

CO1. शिक्षार्थी आधुनिक कविता के आरम्भ का रचनात्मक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी रत्नाकार के काव्य के अध्ययन से ब्रजभाषा के माधुर्य तथा भक्तिकालीन कृष्णभक्ति परम्परा में कवि के नवीन दृष्टिकोण का ऐतिहासिक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी हिन्दी नवजागरण में खड़ी बोली हिन्दी में काव्यरचना के सशक्त आरम्भ के साक्ष्य प्राप्त करता है। मैथिलीशरण गुप्त कृत साकेत की विषयवस्तु उसे हिन्दी कविता में स्त्री के मूक संघर्षों व बलिदानों के चित्रण का महत्वपूर्ण अभिलेख बनाती है, शिक्षार्थी इस पुस्तक के अध्ययन से हिन्दी में स्त्री विमर्श के बहुत आरंभिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कवियों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा और उनकी कविताओं के अध्ययन से छायावाद युग का ऐतिहासिक व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी छायावादी कविता के अध्ययन से प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य, भारत की गहन भारतीय परम्परा तथा विचार की नवीन आधुनिक सरणियों/पद्धतियों का रचनात्मक एवं सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. जगन्नाथदास 'रत्नाकर': उद्धत शतक (व्याख्या हेतु प्रारंभिक 25 पद), नागरी प्रचारिणी सभी काशी।
2. मैथिलीशरण गुप्त: साकेत (व्याख्या के लिए केवल नवम सर्ग), साकेत प्रकाशन, चिरगांव झाँसी।
3. जयशंकर प्रसाद: कामायनी (व्याख्या के लिए केवल श्रद्धा और इड़ा सर्ग), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला: राग-विराग, संपा0 रामविलास शर्मा (व्याख्या के लिए 'राम की शक्तिपूजा), लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद।
5. सुमित्रानंदन पंतः रश्मिबंध (व्याख्या के लिए प्रारंभिक 15 कविताएँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. महादेवी वर्मा: संधिनी (व्याख्या के लिए कविता संख्या 25 से 40 तक), लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद।

VI

षष्ठ प्रश्न-पत्र - पाश्चात्य काव्यशास्त्र(द्वितीय सत्र)

CO1. शिक्षार्थी साहित्यालोचन की पश्चिमी परम्परा का विस्तृत ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी प्राचीन यूनानी विचारक प्लेटो, अरस्तू तथा लोंगिनुस की काव्य मूल्यांकन सम्बन्धी मान्यताओं और स्थापनाओं यथा काव्य-सत्य, अनुकरण व विरेचन, त्रासदी विवेचन, उदात्त की अवधारणा आदि का ऐतिहासिक तथा सैद्धान्तिक परिचय प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी अंग्रेज़ी के महत्वपूर्ण साहित्यालोचक मैथ्यू आर्नल्ड, क्रोचे, आई ए रिचर्ड्स और डी एस इलियट के समालोचन सिद्धान्तों का ऐतिहासिक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग्रेज़ी कवि वर्ड्सवर्थ के काव्यभाषा सिद्धान्त और कॉलरिज के कल्पना सिद्धान्त के अध्ययन से पश्चिम के प्रसिद्ध साहित्यान्दोलन स्वच्छंदतावाद का ऐतिहासिक परिचय और सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी पश्चिमी साहित्य और संस्कृति की महत्वपूर्ण विचारधाओं यथा मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद और उत्तरआधुनिकता का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित विचारकों व उनके सिद्धान्तों के अध्ययन से आलोचना का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र: संक्षिप्त परिचय, प्लेटो के काव्य सिद्धांत, अरस्तू: अनुकरण सिद्धांत, विरेचन सिद्धात एवं त्रासदी विवेचन, लोंजाइन्स: उदात्त की अवधारणा एवं भेद।
2. मैथ्यू आर्नल्ड: कला और नैतिकता का सिद्धांत, क्रोचे: अभिव्यंजनावाद, आई0 ए0 रिचर्ड्स: काव्यमूल्य, टी0 एस0 इलियट: कला की निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत।
3. वर्ड्सवर्थ: काव्यभाषा सिद्धांत, कालरिज: कल्पना सिद्धांत।
4. विविध वाद: स्वच्छंदतावाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद, उत्तर आधुनिकतावाद।

VII

सप्तम प्रश्न-पत्र - हिंदी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल (द्वितीय सत्र)

CO1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी आधुनिक काल के राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी आधुनिक काल में अस्तित्व में आए साहित्यिक आंदोलनों अथवा विशिष्ट धाराओं यथा छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान तथा नवीन रचना-दृष्टि के आलोक में उनके प्रमुख रचनाकारों का परिचय प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी हिन्दी में गद्य लेखन के उद्भव-विकास तथा गद्य की प्रमुख विधाओं यथा नाटक, कहानी, उपन्यास और निबंध का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी कथेतर गद्य के अन्तर्गत स्मारक साहित्य और उसकी विधाओं यथा संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, फीचर, डायरी, रिपोर्ताज आदि का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. आधुनिक काल की पृष्ठभूमि: भारतेन्दु युग: प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ, द्विवेदी युग: प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ।
2. छायावाद: प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ, छायावादोत्तर युग: प्रगतिवाद, प्रयोगवाद: प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ, समकालीन हिंदी साहित्य: पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि।
3. हिंदी गद्य साहित्य का विकास: नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी एवं निबंध।
4. हिंदी का स्मारक साहित्य: संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, फीचर, डायरी, रिपोर्ताज आदि।

VIII

अष्टम प्रश्न-पत्र - हिंदी कथा एवं नाटक साहित्य (द्वितीय सत्र)

CO1. शिक्षार्थी हिन्दी उपन्यास, कहानी तथा नाटक के उद्भव-विकास तथा महत्व का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी गोदान के अध्ययन से भारतीय समाज की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना का अंतरंग साक्षात्कार करते हुए बदल रही जीवन स्थितियों और नए संकटों-समस्याओं को समझने की वैचारिक पद्धति का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी कगार की आग के अध्ययन से भारतीय समाज में दलित एवं शोषित वर्ग की पीड़ा का साक्षात्कार करते हुए एक नए सामाजिक-राजनीतिक विमर्श का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिन्दी कहानी के विकासक्रम, उनके बहुवर्णी सामाजिक कथ्य, प्रमुख कहानी आंदोलनों तथा बदलते शिल्प का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित नाटक स्क्ंदगुप्त तथा लहरों के राजहंस के अध्ययन से हिन्दी नाट्यलेखन के विकास, भारतीय व पश्चिमी परम्परा में उसके शिल्पगत रचाव, नाटक के ऐतिहासिक-सामाजिक अभिप्रायों, प्रकारों तथा रंगमंच विधा का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6.शिक्षार्थी कथा साहित्य तथा नाटक की समीक्षा का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. प्रेमचंद: गोदान, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद।
2. हिमांशु जोशी: कगार की आग, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
3. सं0 बटरोही: हिंदी कहानी के नौ कदम, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा ।
4. जयशंकर प्रसाद: स्कन्दगुप्त, लीडर प्रेस, इलाहाबाद।
5. मोहन राकेश: लहरों के राजहंस, राधाकृष्ण प्रकशन नई दिल्ली।
6. संपा0 राकेश गुप्त एवं चतुर्वेदी: एकांकी मानस (संक्षिप्त संस्करण), ग्रंथायन, अलीगढ़।

IX

नवम प्रश्नपत्र - आधुनिक हिंदी काव्य : छायावादोत्तर (तृतीय सत्र)

CO1. शिक्षार्थी छायावादोत्तर हिन्दी कविता और उसकी विभिन्न काव्यधाराओं यथा प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता आदि का रचनात्मक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी दिनकर के महाकाव्य उर्वशी के अध्ययन से भारतीय दर्शन की परम्परा से परिचित होता है तथा आधुनिक संसार में उसकी पुनर्व्याख्या का संधान करता है, जिससे उसे

भेदबुद्धि यथा पाप-पुण्य, स्वर्ग-नर्क, ऊँच-नीच आदि से ऊपर उठकर संसार को समझने की चेतना, प्रेरणा व ज्ञान प्राप्त होता है।

CO3. शिक्षार्थी नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताओं के अध्ययन से प्रगतिशील हिन्दी कविता के स्रोत सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करता है। वह देश की वंचित, विपन्न, जातीय व वर्गीय भेदभाव की शिकार साधारण जनता की पीड़ा और संघर्ष को समझने की प्रेरणा पाता है तथा कविता में उस पीड़ा और संघर्ष की अभिव्यक्ति से काव्य-प्रयोजन की एक सर्वथा नवीन दिशा का ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, केदारनाथ सिंह, लीलाधर जगूड़ी, अशोक वाजपेयी आदि की कविताओं के अध्ययन से प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता आदि का रचनात्मक व सैद्धान्तिक ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी छायावादोत्तर काल की हिन्दी कविता की समीक्षा का रचनात्मक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. रामधारी सिंह दिनकर: उर्वशी (व्याख्या के लिए केवल तृतीय सर्ग)। प्रकाशक: उदयांचल प्रकाशन, राजेन्द्र नगर, पटना।
2. वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन': नागार्जुन' की प्रतिनिधि कविताएँ, (उनको प्रणाम, बतौल्त ब्रेख्त, बादल को घिरते देखा है, बहुतदिनों के बाद, मेरी भी आभा है इसमें, सोनियासमन्दर, प्रतिबद्ध हूँ, वो हमें चेतावनी देने आये थे, सिन्दूर तिलकित भाल, वह दन्तुरित मुस्कान, यह तुम थीं, गुलाबीचूडियाँ, खुरदरे पैर, घिन तो नहीं आती है गीले पाँख की दुनिया गई है छोड़, प्रेत का बयान, अकाल और उसके बाद, आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी, शासन की बन्दूक, पसीने का गुण-धर्म,) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. संपादक: डा. मधुबाला नयाल: समय राग। (व्याख्या हेतु सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर, नरेश मेहता, केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेयी, लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल की सभी रचनाएँ), ज्ञानोदय प्रकाशन, नैनीताल।

X

दशम प्रश्नपत्र - भाषा विज्ञान (तृतीय सत्र)

CO1. Linguistics अर्थात् भाषा-विज्ञान भाषा एवं साहित्य ही नहीं, अभिव्यक्तियों के सन्दर्भ में समाज को समझने की पद्धति के रूप में विकसित होने वाला विषय भी है। अत: इस पाठ्यक्रम से शिक्षार्थी भाषा विज्ञान के अर्थ, स्वरूप, भाषा व्यवस्था,भाषा व्यवहार और

उसके महत्व का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी भाषा प्रयोगशालाओं में उच्चस्तरीय अध्ययन व शोध हेतु आधार योग्यता व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी भाषा विज्ञान की प्रमुख अध्ययन-शाखाओं यथा स्वन, स्वनिम, रूप, रूपिम, वाक्य, अर्थ आदि का सैद्धान्तिक व तकनीकी ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी भाषा की सामाजिक संरचनाओं तथा भाषा के स्वरूप के आधार पर सामाजिक अभिव्यक्ति के अध्ययन का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी साहित्यिक कृतियों के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. भाषा और भाषा विज्ञान: भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार, भाषा संरचना और भाषिक-प्रकार्य, साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान की उपयोगिता।
2. स्वन प्रक्रिया: स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वाग् अवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन, स्वनिम विज्ञान का स्वरूप,स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण।
3. रूपप्रक्रिया: रूपप्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद: मुक्त-आबद्ध, अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य विश्लेषण, निकटस्थ-अवयव विश्लेषण, गहन संरचना और बाह्य संरचना।
4. अर्थविज्ञान: अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ-परिवर्तन।

XI

एकादश प्रश्नपत्र - निबंध एवं स्मारक साहित्य (तृतीय सत्र)

CO1. शिक्षार्थी निबंध विधा के स्वरूप, प्रकार और महत्व का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी हिन्दी में निबंध विधा के उद्भव एवं विकास का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित निबंधों के अध्ययन से हिन्दी के प्रमुख निबंधकारों का परिचय, निबंध की शैलियों तथा विधा का वैचारिक व रचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप, उसकी विभिन्न विधाओं तथा महत्व का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी निबंध तथा स्मारक साहित्य की समीक्षा का ज्ञान तथा प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. नीरजा टंडन: हिंदी निबंध मंजूषा (पाठ्यक्रम में निर्धारित निबन्ध- सच्ची कविता (बालकृष्ण भट्ट), सच्ची वीरता (सरदार पूर्णसिंह), काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था (रामचन्द्र शुक्ल), देवदारू(हजारीप्रसाद द्विवेदी), अनुभूति,सत्य और यथार्थ(महादेवीवर्मा), प्रेमचन्द के फटे जूते (हरिशंकर परसाई) ,कविता का भविष्य (रामधारीसिंह दिनकर),चेतना का संस्कार (अज्ञेय), आदिकाव्य(रामविलासशर्मा), साहित्य का स्तर)डॉ.नगेन्द्र, आम्रमंजरी(विद्यानिवासमिश्र), अपनी ही मौत पर (धर्मवीर भारती), राघव: करुणोरस: (कुबेरनाथराय),निबन्ध की तलाश में (रमेशचन्द्रशाह) ।
2. महादेवी वर्मा: पथ के साथी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. केशवदत्त रुवाली/जगतसिंह बिष्ट: स्मारक साहित्य संग्रह, तारामंडल प्रकाशन, अलीगढ़।

XII

द्वादश प्रश्नपत्र - हिंदी भाषा (तृतीय सत्र)

CO1. शिक्षार्थी भारत की प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक आर्याभाषाओं का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी हिन्दी के भौगोलिक विस्तार, उपभाषाओं और बोलियों के अत्यन्त समृद्ध संसार का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी हिन्दी की भाषिक संरचना का विस्तृत रचनात्मक परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी हिन्दी भाषा के विविध रूपों, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति एवं हिन्दी के वैश्विक महत्व का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी नए डिजिटल संसार में कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग की प्रविधियों, तकनीक और भाषा शिक्षण का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी रोजगार अथवा आजीविका के क्षेत्र में हिन्दी भाषा के व्यवहार का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ: वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ: पालि, प्राकृत, शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी। अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण।
2. हिंदी का भौगोलिक विस्तार: हिंदी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी,

बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ, कुमाउनी और गढ़वाली की विशेषताएँ।

3. हिंदी का भाषिक स्वरूप: हिंदी शब्द रचना: उपसर्ग, प्रत्यय, समास, रूपरचना-लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप, हिंदी वाक्य-रचना, पदक्रम और अन्विति।
4. हिन्दी के विविधरूप -सम्पर्क भाषा,राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम भाषा, संचारभाषा,हिन्दी की संवैधानिक स्थिति तथा वर्तमान वैश्विक सन्दर्भ में हिन्दी
5. हिंदी में कम्प्यूटर सुविधाएँ: आँकड़ा-संसाधन और शब्द-संसाधन, वर्तनी-शोधक, मशीनी अनुवाद, हिंदी भाषा-शिक्षण।

XIII (क)

त्रयोदश प्रश्नपत्र (क)- कुमाउनी साहित्य (चतुर्थ सत्र)

CO1. भाषा और साहित्य की नयी उत्तरसंरचनावादी पद्धति में स्थानीय भाषाओं और उनके साहित्य के अध्ययन का महत्व बढ़ा है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी कुमाउनी साहित्य का रचनात्मक परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित **पछ्याण** तथा **इजा** नामक पुस्तकों के अध्ययन से कुमाउनी कविता का रचनात्मक-शिल्पगत परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक **मन्याडर** के अध्ययन से से कुमाउनी कहानी का रचनात्मक-शिल्पगत परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक **मन्खि** के अध्ययन से कुमाउनी निबंध का रचनात्मक-शिल्पगत परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक **आपण पन्यार** के अध्ययन से कुमाउनी नाटक का रचनात्मक-शिल्पगत परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. सं0 डा. दिवा भट्ट: पछ्याण, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
2. डा. शेरसिंह बिष्ट: इजा। (व्याख्या हेतु- 1. बा्ट, 2. चाणै में छुँ, 3. का्स छी उँ मैंस, 4. रितु बदव, 5. हे राम, 6. गौं-घर, 7. शहरी गौंक दुदी, 8. उन दिन, 9. नई सुराज, 10. इजा) । प्रकाशक: गोपेश प्रकाशन, अल्मोड़ा। -
3. बहादुर बोरा 'श्रीबंधु': मन्याडर, कुमाउनी भाषा-साहित्य प्रचार-प्रसार समिति, अल्मोड़ा।
4. डा. शेरसिंह बिष्ट: मन्खि, अविचल प्रकाशन, बिजनौर (उ0प्र0)। -
5. सं0 दामोदर जोशी: आपण पन्यार, जगदम्बा कम्प्यूटर्स, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल)।

अथवा

XIII (ख)

त्रयोदश प्रश्नपत्र (ख) - उत्तराखण्ड के हिंदी कवि (चतुर्थ सत्र)

CO1.आधुनिक हिन्दी कविता परम्परा में उत्तराखंड राज्य के कवियों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षार्थी इस परम्परा और उसमें उत्तराखंड के कवियों के महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO2.गुमानी ने भारतेंदु युग से पूर्व काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग किया था। उनकी कविता तत्कालीन अंग्रेजी/कम्पनी राज और सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों के सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। शिक्षार्थी खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम कवि गुमानी के कृतित्व का ऐतिहासिक-रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.चन्द्रकुंवर बर्त्वाल छायावाद और प्रगतिवाद के संधिकाल के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण कवि हैं। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.लीलाधर जगूड़ी साठोत्तरी हिन्दी कविता के प्रमुख कवि हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बीस वर्ष पश्चात मोहभंग और अवसाद से लड़ रहे आक्रोशित देश और समाज का स्वर उनकी कविता का आरंभिक स्वर है। वे आज भी सक्रिय और रचनारत हैं। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.वीरेन डंगवाल एवं मंगलेश डबराल समकालीन हिन्दी कविता में अस्सी के दशक के दो सबसे महत्वपूर्ण कवि हैं। वे हिन्दी कविता की प्रगतिशील परम्परा के नए संवाहक है, जिनकी अभिव्यक्ति जनसाधारण की समस्याओं और संघर्षों से जुड़ी है। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6.हरीशचन्द्र पांडे समकालीन हिन्दी कविता में नब्बे के दशक के प्रमुख कवि हैं। देश में उदारवाद, भूमंडलीकरण और विभिन्न सामाजिक परिवर्तनों के बीच बदलते हुए जीवन और समाज के प्रसंग उनकी कविता का विषय हैं। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO7.शिक्षार्थी समकालीन हिन्दी कविता की समीक्षा का रचनात्मक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

1. गुमानी
2. चंद्रकुँवर बर्त्वाल
3. लीलाधर जगूड़ी
4. मंगलेश डबराल
5. वीरेन डंगवाल
6. हरीशचंद्र पाण्डेय

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्यपुस्तक:

उत्तराखण्ड के हिंदी कवि - संपा0 प्रो0 दिवा भट्ट

अथवा

XIII (ग)

त्रयोदश प्रश्नपत्र (ग) - उत्तराखण्ड के हिंदी कथाकार (चतुर्थ सत्र)

CO1. हिन्दी के प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में उत्तराखंड राज्य के कथाकारों का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान व स्थान है। शिक्षार्थी इस परम्परा और उसमें उत्तराखंड के कथाकारों के समग्र योगदान और महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी हिन्दी के उपन्यास साहित्य में उत्तराखंड के उपन्यासकारों के कृतित्व का परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान पाप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास कसप के अध्ययन से हिन्दी साहित्य में विकसित हो रहे नवीन उत्तरआधुनिक कथ्य (स्थानीय-आंचलिक एवं मुक्त-ग्लोबल) एवं शिल्प का परिचय तथा उसका सैद्धान्तिक आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास गोबर गणेश के अध्ययन से उत्तराखंड के कुमाउनी अंचल के लोक जीवन का परिचय तथा बदलते जीवनमूल्यों व सामाजिक संरचनाओं का सैद्धांतिक आलोचनात्मक प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिन्दी कहानी तथा उसके प्रमुख आंदोलनों अथवा प्रवृत्तियों(मनोवैज्ञानिक कहानी, नयी कहानी, प्रगतिशील कहानी, अकहानी, आंचलिक अकहानी आदि) में उत्तराखंड के कहानीकारों के महत्वपूर्ण रचनात्मक योगदान का परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी कथा साहित्य की समीक्षा का ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

(क) उपन्यासकार:

1. मनोहरश्याम जोशी: कसप (व्याख्या हेतु), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. रमेशचंद्र शाह: गोबर गणेश (व्याख्या हेतु), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

(ख) कहानी-संग्रह:

3. पाँच कहानियाँ (1. दुष्कर्मी- इलाचन्द्र जोशी, 2. रज्जो- रमाप्रसाद घिल्डियाल 'पहाड़ी', 3. हलवाहा- शेखर जोशी, 4. बीच की दरार- गंगाप्रसाद 'विमल', 5. अ-रचित- दिवा भट्ट)- संपा0 डा. जगतसिंह बिष्ट, प्रकाश प्रकाशन, चौघानपाटा, अल्मोड़ा।

XIV (क)

चतुर्दश प्रश्नपत्र - (क) लोक साहित्य (चतुर्थ सत्र)

CO1. किसी भी समाज और राष्ट्र की एक मूल लोक परम्परा होती है, जिससे उस राष्ट्र और समाज के समग्र सामाजिक चरित्र का निर्माण होता है। वैश्विक स्तर पर लोक साहित्य के अध्ययन एवं शोध को महत्वपूर्ण माना गया है तथा विश्वविद्यालयों में इसके पृथक विभाग स्थापित किए गए हैं। लोक साहित्य के अध्ययन से शिक्षार्थी इस मूल लोक परम्परा के अर्थ, स्वरूप और महत्व का परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी लोक संस्कृति और लोक साहित्य के विविध सैद्धान्तिक पक्षों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी अभिजात साहित्य और लोक साहित्य के अंतर्सम्बन्धों का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी लोक साहित्य की अध्ययन प्रक्रिया(संकलन तथा पाठ निर्धारण) का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी लोक साहित्य के विविध रूपों का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी लोक साहित्य के शोध का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

1. लोक और लोक-वार्ता, लोक-विज्ञान।
2. लोक संस्कृति और साहित्य
3. लोक साहित्य का स्वरूप
4. अभिजात साहित्य और लोक साहित्य का अंतःसंबंध।
5. लोक साहित्य की अध्ययन-प्रक्रिया एवं संकलन की समस्याएँ।
6. लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण: लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, कहावतें, मुहावरे, पहेलियाँ, लोक संगीत।

अथवा

XIV(ख)

चतुर्दश प्रश्नपत्र - (ख) कुमाउनी लोक साहित्य (चतुर्थ सत्र)

CO1. भाषा और साहित्य की नयी उत्तरसंरचनावादी पद्धति में लोक साहित्य के अध्ययन का महत्व बढ़ा है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी कुमाउनी लोक-साहित्य का रचनात्मक परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से कुमाउनी लोक गीतों के स्वरूप, विषयवस्तु एवं प्रकार का रचनात्मक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से कुमाउनी लोक साहित्य के विविध रूपों का रचनात्मक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से कुमाउनी लोक गीतों के स्वरूप, विषयवस्तु एवं

प्रकार का रचनात्मक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से कुमाउनी लोक कथाओं के स्वरूप, विषयवस्तु एवं प्रकार का रचनात्मक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से उत्तराखंड लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु कुमाउनी लोक साहित्य का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. सं0 देवसिंह पोखरिया: न्यौली सतसई, (व्याख्या हेतु प्रारंभ के 300 छंद), कंसल बुक डिपो, नैनीताल।
2. सं0 देवसिंह पोखरिया: कुमाउनी लोक साहित्य, (व्याख्या हेतु न्यौली को छोड़कर सभी लोकगीत) - मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद्, भोपाल।
3. डा.प्रयाग जोशी: कुमाउनी लोक गाथाएँ (प्रथम भाग) (व्याख्या हेतु प्रारंभ की 6 लोकगाथाएँ), किशोर एण्ड संस, देहरादून ।
4. डा. प्रभा पंत: कुमाउनी लोककथा (व्याख्या हेतु प्रारंभ की 10 लोककथाएँ), अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
5. डा. कृष्णानंद जोशी: कुमाऊँ का लोक साहित्य, (व्याख्या हेतु केवल धार्मिक गीत), प्रकाश बुक डिपो, बरेली।

अथवा

XIV(ग)

चतुर्दश प्रश्नपत्र - (ग) भारतीय साहित्य (चतुर्थ सत्र)

CO1. शिक्षार्थी भारतीयता की मूल भावना, भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति तथा समाजशास्त्र से परिचित होता है।

CO2. शिक्षार्थी अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के हिन्दी अनुवाद और अध्ययन की समस्याओं से परिचित होता है।

CO3. शिक्षार्थी भारतीय साहित्य के समग्र स्वरूप और महत्व का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी भारत के दक्षिणी भाषा वर्ग(मलयालम, तमिल, तेलगु व कन्नड़), पूर्वी भाषा वर्ग(उ़डिया, बंगला, असमिया व मणिपुरीद्व तथा पश्चिमोत्तर भाषा वर्ग(मराठी, गुजराती, पंजाबी, कश्मीरी व उर्दू) के साहित्य का सामान्य परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित अनूदित पुस्तकों के अध्ययन से भारतीय साहित्य का रचनात्मक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी भारतीय साहित्य के अध्ययन से जनसाधारण के स्तर पर राष्ट्र की एकता, सम्पूर्णता, विराटता व अखंडता का साक्षात्कार करता है।

CO7. शिक्षार्थी में राष्ट्रगौरव और राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास होता है

निर्धारित पाठ्यक्रम:

प्रथम खंड:

1. भारतीय साहित्य का स्वरूप
2. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
3. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब
4. भारतीयता का समाजशास्त्र
5. हिंदी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

द्वितीय खंड:

1. दाक्षिणात्य भाषा वर्ग: मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़।
2. पूर्वांचल भाषा वर्ग: उड़िया, बँगला, असमिया, मणिपुरी।
3. पश्चिमोत्तर भाषा वर्ग: मराठी, गुजराती, पंजाबी, कश्मीरी, उर्दू।

तृतीय खंड - पाठ्यपुस्तकें:

1. अग्निगर्भ (बंगला)- महाश्वेता देवी
2. कोच्चिन के दरख्त (मलयालम)- के0जी0 शंकरपिल्लै
3. घासीराम कोतवाल (मराठी)- विजय तेंदुलकर
4. जसमा ओड़न (गुजराती)- शांता गाँधी

(नोट: उक्त पुस्तकों से मात्र आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे।)

XV(क)

पंचदश प्रश्नपत्र - (क) विशिष्ट अध्ययन: प्रेमचंद(चतुर्थ सत्र)

CO1. प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माताओं में अग्रणी हैं। उनके उपन्यासों और कहानियों ने हिन्दी में कथा साहित्य को एक स्थायी एवं सशक्त आधार प्रदान किया है। आज भी उनकी परम्परा में कथा लेखन होता है। इस पाठ्यकम के अध्ययन से शिक्षार्थी हिन्दी कथा साहित्य की परम्परा और उसमें प्रेमचंद के योगदान एवं महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO2.रंगभूमि उपन्यास स्वतंत्रतापूर्व के भारत की बदल रही राजनीतिक-आर्थिक स्थितियों और सामाजिक जीवनमूल्यों के बीच सम्बन्धों की कथा कहता है। अत्यन्त वंचित और विपन्न अंधे भिखारी को नायक बनाने वाले इस उपन्यास के अध्ययन से शिक्षार्थी उन आर्थिक दिशाओं और सामाजिक स्थितियों का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है, जिन्होंने स्वतंत्रता पश्चात देश का सामना होना था।

CO3.शिक्षार्थी प्रेमचंद के उपन्यासों के शिल्प का परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी कुछ विचार नामक संग्रह में संकलित प्रेमचंद के निबंधों के अध्ययन से उनके

राजनीति, आर्थिक और सामाजिक विचारों का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.प्रेमचंद जन साधारण के जीवन के कहानीकार हैं। मानसरोवर भाग 1 के अध्ययन से शिक्षार्थी प्रेमचंद की कहानियों की अंन्तर्वस्तु और शिल्प का परिचय प्राप्त करता है।

CO6.शिक्षार्थी प्रेमचंद के साहित्य पर विशेषज्ञता प्राप्त करता है, जो परवर्ती उच्चस्तरीय शोधादि कार्यों में सहायक होती है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. रंगभूमि
2. कुछ विचार
3. मानसरोवर भाग -1

(टिप्पणी: प्रेमचंद का संपूर्ण साहित्य पाठ्यक्रम में है। उक्त पाठ्यपुस्तकों का संदर्भ केवल व्याख्या के लिए है।)

अथवा

XV(ख)

पंचदश प्रश्नपत्र - (ख) विशिष्ट अध्ययन: आचार्य रामचंद्र शुक्ल (चतुर्थ सत्र)

CO1.शिक्षार्थी हिन्दी आलोचना के उद्भव एवं विकास का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी आचार्य शुक्ल के निबंधों के अध्ययन से हिन्दी निबंध के विकास का परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी रामचंद्र शुक्ल ग्रंथावली के अध्ययन से साहित्य पर विचार एवं मूल्यांकन की भारतीय और पश्चिमी पद्धतियों का तुलनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी वैचारिक तथा मनोवैज्ञानिक निबंधों के उत्कर्ष का साक्षात्कार करता है, जिससे उसे सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक संदर्भों में साहित्य के आकलन की आधुनिक द्दष्टि प्राप्त होती है।

CO5.शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास तथा जायसी, तुलसी, सूर आदि कवियों के अध्ययन की नवीन द्दष्टि प्राप्त करता है।

CO6.शिक्षार्थी भारतीय काव्यशास्त्र की मौलिक एवं नवीन व्याख्या तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

रामचंद्र शुक्ल ग्रंथवाली: (व्याख्या हेतु ग्रंथावली का केवल निबंध भाग)

अथवा

XV(ग)

पंचदश प्रश्नपत्र - (ग) विशिष्ट अध्ययन: कबीरदास (चतुर्थ सत्र)

CO1. विश्व की प्राचीन कविता परम्परा में भारत की भक्तिकालीन निर्गुण धारा के कवि कबीर का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व भर में उन पर शोधकार्य हुए हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी कबीर की कविता एवं दर्शन का रचनात्मक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी कबीर के अध्ययन से भक्ति आंदोलन, संत परम्परा तथा निर्गुण काव्यधारा का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी कबीर के अध्ययन से मध्यकालीन भारतीय समाज तथा उसमें उपस्थित जाति-धर्म, अज्ञान, अंधविश्वास आदि के विरुद्ध प्रतिरोध का रचनात्मक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी कविता के दार्शनिक पक्ष का परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी कविता के सामाजिक पक्ष का परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी साहित्य की समग्र आध्यात्मिक एवं सामाजिक समीक्षा का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

कबीर ग्रंथावली - संपा0 श्यामसुंदर दास: (व्याख्या हेतु साखी भाग और आंरभिक 100 पद) टिप्पणी: कबीरदास का संपूर्ण साहित्य पाठ्यक्रम में है। उक्त पाठ्यपुस्तक से व्याख्या पूछी जाएगी।

अथवा

XV(घ)

पंचदश प्रश्नपत्र - (घ) विशिष्ट अध्ययन: सूरदास (चतुर्थ सत्र)

CO1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी भारतीय दर्शन में ईश्वर के स्वरूप पर हुई मीमांसा का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी भारतीय अध्यात्म एवं भक्ति में ज्ञानयोग की निर्गुणधारा और प्रेम माधुर्य की सगुणोपासना के विमर्श का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी लोक और प्रकृति के कार्य-व्यवहार का रचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी ईश्वर की लौकिकता और उससे सम्भव हुई संसार और समाज की शुभ्रता का रचनात्मक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी उच्च जीवन मूल्यों तथा नैतिकता का ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

सूरसागर सार - संपा0 धीरेन्द्र वर्मा:

टिप्पणी: सूरदास का संपूर्ण साहित्य पाठ्यक्रम में है। उक्त पाठ्यपुस्तक से व्याख्या पूछी

जाएगी।

अथवा

XV(ङ)

पंचदश प्रश्नपत्र - (ङ) विशिष्ट अध्ययन: सुमित्रानंदन पंत (चतुर्थ सत्र)

CO1.छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता की प्रथम युग प्रवृत्ति है, जिसने आगे की कविता का आधार रचा। सुमित्रानंनदन पंत इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता और छायावाद का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी सुमित्रानंदन पंत के कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी कविता और प्रकृति के चिरसम्बंधों का रचनात्मक तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी सुमित्रानंदन पंत के काव्य के अध्ययन से प्रगतिवाद का आरम्भिक परिचय प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी आधुनिक काव्यकला में पाश्चात्य तथा भारतीय नवोन्मेष का रचनात्मक परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

चिदम्बरा - सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

अथवा

तारापथ- सुमित्रानंदन पंत, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

टिप्पणी: सुमित्रानंदन पंत का संपूर्ण साहित्य पाठ्यक्रम में है। उक्त पाठ्यपुस्तक से व्याख्या पूछी जाएगी।

अथवा

XV(च)

पंचदश प्रश्नपत्र - (च) विशिष्ट युग प्रवृत्ति का अध्ययन (छायावाद)

CO1. उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में छायावाद हिन्दी कविता का अत्यन्त महत्वपूर्ण कालखंड तथा काव्यान्दोलन है। छायावाद का हिन्दी कविता के इतिहास में वही स्थान है, जो अंग्रेजी कविता के इतिहास में Romanticism अर्थात् स्वच्छंदतावाद का। शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से हिन्दी कविता की इस महत्वपूर्ण युग प्रवृत्ति छायावाद का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी माखनलाल चतुर्वेदी, रामकुमार वर्मा तथा मुकुटधर पाण्डेय के कृतित्व का युगीन परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी छायावाद के कीर्तिस्तम्भ जयशंकर प्रसाद के काव्य का युगीन रचनात्मक परिचय तथा आलोचनात्मक सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी छायावाद के कीर्तिस्तम्भ सुमित्रानंदन पंत के काव्य का युगीन रचनात्मक परिचय तथा आलोचनात्मक सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी छायावाद के कीर्तिस्तम्भ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य का युगीन रचनात्मक परिचय तथा आलोचनात्मक सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी छायावाद की कीर्तिस्तम्भ महादेवी वर्मा के काव्य का युगीन रचनात्मक परिचय तथा आलोचनात्मक सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

माखनलाल चतुर्वेदी: आधुनिक कवि: प्रारंभिक 10 कविताएँ

रामकुमार वर्मा: प्रारम्भिक 10 कविताएँ

मुकुटधर पाण्डेय: कश्मीर सुषमा

जयशंकर प्रसाद: लहर (अंतिम 3 कविताएँ)

सुमित्रानंदन पंत: पल्लविनी (प्रारंभिक 10 कविताएँ)

निराला: अपरा: (प्रारंभ की 10 कविताएँ)

महादेवी वर्मा: यामा: (आरंभिक 10 गीत)

अथवा

XV(छ)

पंचदश प्रश्नपत्र - (छ) हिन्दी पत्रकारिता

CO1. पत्रकारिता रोज़गार का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसका विस्तार बढ़ता जा रहा है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी पत्रकारिता का मूलभूत ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी विश्व तथा हिन्दी पत्रकारिता का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी हिन्दी में पत्रकारिता के मूल तत्वों तथा प्रकारों का तकनीकी ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी समाचार-संकलन तथा सम्पादन कला के समस्त पक्षों का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी पत्रकारिता से सम्बन्धित लेखन यथा सम्पादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन, दृश्य सामग्री आदि का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा मुद्रण कला का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO7. शिक्षार्थी भारतीय संविधान, प्रेस क़ानून तथा पत्रकारिता की आचार संहिता का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO8. समग्रता में शिक्षार्थी पत्रकार बनने की प्रेरणा, आधारभूत ज्ञान तथा प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

1. पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख प्रकार।
2. विश्व पत्रकारिता का उदय, भारत में पत्रकारिता का आरंभ।
3. हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास।
4. समाचार पत्रकारिता के मूल तत्व- समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम।
5. संपादन कला के सामान्य सिद्धांत- शीर्षकीकरण, पृष्ठ-विन्यास, आमुख और समाचारपत्र की प्रस्तुति-प्रक्रिया।
6. समाचार पत्रों के विभिन्न स्तंभों की योजना।
7. दृश्य सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स) की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता।
8. समाचार के विभिन्न स्रोत।
9. संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्यपद्धति।
10. पत्रकारिता से संबंधित लेखन: संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन (फालोअप) आदि की प्रविधि।
11. इलैक्ट्रानिक मीडिया की पत्रकारिता: रेडियो, टी0वी0, वीडियो, केबल, मल्टी मीडिया और इंटरनेट की पत्रकारिता।
12. प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रणकला, प्रूफ शोधन, ले आउट तथा पृष्ठ-सज्जा।
13. पत्रकारिता का प्रबंधन- प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री तथा वितरण व्यवस्था।
14. भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार, सूचनाधिकार एवं मानवाधिकार।
15. मुक्त प्रेस की अवधारणा।
16. लोक-संपर्क तथा विज्ञापन।
17. प्रसार भारती तथा सूचना प्रौद्योगिकी।
18. प्रेस संबंधी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता।
19. प्रजातंत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तंभ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व।

अथवा

XV(ज)

पंचदश प्रश्नपत्र - (ज) अनुवाद : सिद्धान्त एवं प्रयोग

CO1. अनुवाद दो भाषाओं के बीच कार्य-व्यवहार को सुगम बनाता है। शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से अनुवाद प्रक्रिया का समग्र परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी अनुवाद के स्वरूप,विभिन्न क्षेत्रों तथा सीमाओं का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी अनुवाद प्रकिया के विभिन्न चरण और प्रविधि यथा विश्लेषण, अर्थान्तरण, पुनर्गठन, सम्प्रेषण आदि का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी समतुल्यता के सिद्धान्त का परिचय तथा अनुवाद के विभिन्न प्रकारों/क्षेत्रों यथा साहित्यिक, कार्यालयी,मानविकी, संचार माध्यमों, वैज्ञानिक एवं तकनीकी इत्यादि का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी अनुवाद की समस्याओं का विस्तृत परिचय प्राप्त करते हुए अनुवाद का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO6. नयी वैश्विक परिस्थितियों एवं भूमंडलीकृत संसार में संचार, संवाद एवं सम्प्रेषण के सरकारी और गैरसरकारी क्षेत्रों में रोजगार के नए और समृद्ध अवसर उपस्थित हुए हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी समग्रता में इन अवसरों का लाभ उठाने की मूलभूत योग्यता और विशेषज्ञता अर्जित करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

1. अनुवाद: परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएँ।
2. अनुवाद का स्वरूप: अनुवाद कला, विज्ञान अथवा शिल्प।
3. अनुवाद की इकाई: शब्द, पदबंध, वाक्य, पाठ।
4. अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि: विश्लेषण, अर्थान्तरण, पुनर्गठन। अनुवाद-प्रक्रिया के विभिन्न चरण, स्रोत भाषा के पाठ का विश्लेषण एवं उसके अर्थग्रहण की प्रक्रिया, स्रोतभाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थान्तरण की प्रक्रिया। अनूदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ-संप्रेषण की प्रक्रिया। अनुवाद-प्रक्रिया की प्रकृति।
5. अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांत।
6. अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार: कार्यालयी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक, मानविकी, संचारमाध्यम, विज्ञापन आदि।
7. अनुवाद की समस्याएँ: सुजनात्मक अथवा साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ, कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, विधि-साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, कोश एवं पारिभाषिक शब्दार्थ के निर्माण की समस्याएँ, मीडिया क्षेत्र के अनुवाद की समस्याएँ, विज्ञापन के अनुवाद की समस्याएँ।
8. अनुवाद के उपकरण: कोश, पारिभाषिक शब्दावली, थिसारस, कम्प्यूटर आदि।
9. अनुवाद: पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन।

10. मशीनी अनुवाद।
11. अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगिकता एवं व्यावसायिक परिदृश्य।
12. अनुवादक के गुण।
13. पाठ की अवधारणा और प्रकृति: पाठ शब्द, प्रति शब्द।शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, पूर्ण और आंशिक अनुवाद, आशु अनुवाद।
14. व्यावहारिक अनुवाद: प्रश्नपत्र में दिए गए अंग्रेजी अवतरण का हिंदी अनुवाद।

अथवा

XV (Dissertation|

लघु शोधप्रबंध

CO1. शिक्षार्थी शोध के अर्थ, स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी भाषा और साहित्य की शोध प्रविधि का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी शोध प्रक्रिया का व्यावहारिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी शोध प्रबंध के लेखन का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी शोध के अकादमिक तथा सामाजिक उद्देश्य तथा महत्व का परिचय प्राप्त करता है।

टिप्पणी: जिन संस्थागत विद्यार्थियों ने स्नातकोत्तर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सत्रार्ध (हिंदी) की परीक्षा में कुल मिलाकर 55 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किए हों, वे पंचदश प्रश्नपत्र के विकल्प में विभागाध्यक्ष द्वारा निर्दिष्ट विभागीय प्राध्यापक के निर्देशन में लघु-शोध प्रबंध प्रस्तुत करते हैं, जिसका मूल्यांकन निर्देशक तथा बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाता है।

XVI
(Viva Voice) मौखिकी

CO1. शिक्षार्थी समस्त पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन करता है।

CO2. शिक्षार्थी पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप में अभिव्यक्त करने का प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी विषय का अध्ययन करते हुए आत्मसात किए गए ज्ञान की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी विषय को लेकर अपनी मौलिक दृष्टि की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए साक्षात्कार का अभ्यास व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

टिप्पणी: लिखित परीक्षा की समाप्ति के पश्चात् मौखिक परीक्षा संपन्न होती है।

शोध (पी-एच.डी. हिन्दी)

PO1. शोधार्थी पूर्ण अकादमिक तथा शैक्षिक सुविधाओं के साथ उच्चस्तरीय शोध का अवसर प्राप्त करता है।

PO2. शोधार्थी शोध की प्रविधि का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

PO3. शोधार्थी साहित्येतिहास तथा ऐतिहासिक पुनर्लेखन का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

PO4. शोधार्थी व्याख्यात्मक शोध यथा मनोवैज्ञानिक, प्रवृत्तिपरक, सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यशास्त्रीय शोध का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

PO5. शोधार्थी क्षेत्रीय भाषाओं और साहित्य के शोध का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

PO6. शोधार्थी लोकतात्विक शोध का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

PO7. शोधार्थी भाषातात्विक शोध का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

PO8. शोधार्थी तुलनात्मक शोघ का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

PO9. शोधार्थी अपने क्षेत्र, समाज एवं राष्ट्र के हित में उद्देश्यपूर्ण शोध का ज्ञान, अनुभव एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।